e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 5, May 2023

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.423

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205467 |

मौर्य साम्राज्य के तटीय व्यापारिक केन्द्र

ट्विंकल शर्मा
सह–आचार्य, इतिहास
राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू

सारांश :

व्यापार और वाण्ज्यि भारत के आर्थिक जीवन के प्रमुख तत्व रहे हैं। प्राचीन काल से ही यहाँ के निवासियों ने व्यापार के क्षेत्र में गहरी दिलचस्पी दिखाई। मौर्य काल की सुदृढ़ राजनीति परिस्थितियों ने व्यापार और वाणिज्य की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस मसय भारत का व्यापार सीरिया, मिश्र तथा अन्य पश्चिमी देशों के साथ स्थापित हुआ। युनानी और रोमन लेखकों ने भारत के समुद्री व्यापार का वर्णन किया है। मौर्य युग में भारत के पश्चिमी और पूर्वी समुद्र तट पर अनेक महत्वपूर्ण बन्दरगाह ािे जिनमे माध्यम से मौर्य काल में व्यापार किया जता था। भारत से मुख्य रूप से हाथीदांत, सीप, मोती, रंग, नील, कछुऐ की पीठ का निर्माण किया जता था।

प्रमुख शब्द – मौर्य, व्यापार, बन्दरगाह, तट, समुद्र, पूर्वी, पश्चिमी आयात निर्यात, प्राचीन

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205467 |

प्रस्तावना :

प्राचीन भारत में समुद्री व्यापार की परम्परा सिंधु घाटी सभ्यता से शुरू होती है। सिल्क रोड के विकास से पूर्व भारतीय व्यापारियों ने सागर और हिन्द महासागर को पार करते हुए हजारों मील की यात्रा की ये व्यापारी रेशम मसाले, सीप, मोती हाथीदांत ओैर गुलामों का व्यापार करते थे। जैसे–जैसे समुद्री व्यापार फलता फूलता गया वैसे–वैसे भारत मे बन्दरगाहों की स्थापना की गयी। प्राचीन ग्रंथों में बन्दरगाहों के लिए पत्तन शब्द का प्रयोग हुआ है अर्थशास्त्र में बन्दरगाह को पण्यपत्तन कहा गया है। मौर्य युग में भारत के पश्चिमी और पूर्वी समुद्र तटों पर अनेक महत्वपूर्ण बन्दरगाह थे और सभी व्यापारिक नगर इन बन्दरगाहों से जुड़े हुऐ थे। मौर्य काल के प्रमुख बन्दरगाह इस प्रकार थे–

पाप्ल :

पाप्ल निम्न सिंधु घाटी में स्थित एक प्राकृतिक पत्तन था। सिकन्दर में इस स्थान पर बन्दरगाह का निर्माण करवाया था और वहाँ अपनी एक बस्ती बसाई थी, इसी कारण उसे सिकन्दर के स्वर्ग के नाम से जाना जाता है। टार्न के अनुसार मिर्ची का निर्यात इसी बन्दरगाह से होता था।

बर्बरिकम :

बर्बरिकम सिंधु नदी के मुहाने पर स्थित एक प्रसिह पोता श्रय था। स्मिथ ने इसकी पहचान आधुनिक समराह से की है। पेरीपल्स के अनुसार यह सिंधु नदी की सात शाखाओं के डेल्टा पर सिति था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में बर्बर देश की स्त्रोतसी नदी का उल्लेख मिलता है। व्यापारिक उद्देश्य से यह एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह था। सिंध क्षेत्र में आयात निर्यात के लिए इसका उपयोग किया जाता था। इस बन्दरगाह से व्यापारी लाल सागर और फारस की खाड़ी होते हुए मिश्र जाते थे। यहाँ से पुखराज मूँगा, लोबान, शीशे, सोने चाँदी के बर्तन, बहुमूल्य मदिरा, गुग्गल, फिरोजा सूती रेशमी वस्त्र आयात निर्यात किऐ जाते थे। बर्बरिकम से चलकर जहाज भरूकच्छ की ओर जाते थे एक स्थल मार्ग पाटलिपुत्र से भरूकच्छ और बर्बरिकम तक जाता था जिसके द्वारा निर्यात के लिए अनेक वस्तुऐं यहाँ लायी जाती थी।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205467 |

भरूकच्छ :

यह मौर्य काल का सबसे प्रसिद्ध बन्दरगाह था जोकि नर्मदा नदी के तट पर स्थित था। यह पश्चिमी तट का उस मसय का सबसे बड़ा बन्दरगाह था। पेरीपल्स के अनुसार यहाँ पर विदेशी से मदिारा, सीसा महीन बहुमूल्य वस्त्र, स्पर्ण रजत मुद्राऐ मंगायी जाती थी। यहाँ से बाहर जाने वाली वस्तुओं में हाथीदांत, रेशमी और सूतीवस्त्र, मिर्च, बहुमूल्य पत्थर, सुन्दर दासियाँ, अनुलेप आदि थी। यहां के व्यापारी फारस की खाडी तक जाते थे। भरूकच्छ में उत्तरी और दक्षिणी भारत से माल आता था ओर उसे यहीं से विदेशों में निर्यात किया जाता था।

कल्याण :

मौर्यकाल में दक्षिणी भारत के पश्चिमी समुद्र तट पर महाराष्ट्र में मुम्बई के पास थाना जिले में कल्याण नामक एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह था। यह बन्दरगाह देश के अन्य व्यापारिक नगरों और बन्दरगाहो से व्यापारिक मार्गों द्वारा सम्बन्धित था। पेरीपल्स के अनुसार यह दक्षिणापथ का एक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर था और यहाँ लंगर डालने वाले विदेशी जहाजों को मडौच मेज दिया जाता था।

शूपरिक :

शूपरिक बन्दरगाह की पहचान आधुनिक सोपारा से की गयी है जोकि मुम्बई से 60 कि.मी. दूर थाना जिले में स्थित है। दिव्यादान और शूपरिक जात के अनूसार पश्चिमी समुद्र तट पर स्थित इस बन्दरगाह का नाम एक समुद्री व्यापारी के नाम पर पड़ा था। मौर्य काल में यह एक प्रसिद्ध स्थल था। पेरिपल्स में भी सोपारा का उल्लेख किया गया है। इसके अनुसार पश्चिमी तट पर भरूकच्छ के बाद शूपरिक सबसे प्रसिद्ध बन्दरगाह था। यह घोड़ों के क्रयविक्रय का प्रमुख केन्द्र था। मौर्योत्तर काल में भी शूपरिक का महत्व बना रहा।

मुजिरिस :

मुजिरिस वर्तमान भारतीय राज्य केरल में स्थित प्रमुख व्यापारिक बन्दरगाहों में से एक था। मुजिरिस की पहचान क्रेंगनोर नामक स्थान से की जाती है जो त्रावणकोर मे कोट्टयम के

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205467 |

आसपास स्थित था। मुजिरिस ने इस क्षेत्र को फारसियो, फोनीशियनो, यूनानियो, असीरियो और रोमन साम्राज्य से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहाँ अरब और यूनानी व्यापारियों के माल से भरे जहाज खड़े रहते थे। इस बन्दरगाह से विशेष रूप से काली मिर्च निर्यात की जाती थी। इसके अलावा कीमती पत्थर, हाथीदांत मोती भी निर्यात किया जाता था।

ताम्रलिप्ति :

मौर्यकाल में ताम्रलिप्ति पूर्वी समुद्र तट पर स्थित एक प्रमुख बन्दरगाह था। यह नगर बंगाल के समुद्र तट पर गंगा के मुहाने स्थित था। ऐसा माना जाता है कि ताम्रलिप्ति दक्षिण और दक्षिण पूर्व के लिए मौर्य व्यापार मार्ग का निकास बिन्दु था। ताम्रलिप्ति का उल्लेख मकिडेय पुराण वायुपुराण, भरत के नाट्यशास्त्र और वराहमिहिर की बात करते हैं। अर्थशास्त्र में इसका उल्लेख समुद्री व्यापार के एक महत्वपूर्ण एक केन्द्र के रूप में हुआ है। ताम्रलिप्ति को दो मार्ग एक स्थलमार्ग जोत थे। इनमें से दो तटीय मार्ग थे जिनमें से एक मार्ग दक्षिण पश्चिम दिशा को जाता था। दूसरा मार्ग दक्षिण पूर्वी दिशा में आराकान तट से म्यांमार जाता था। पेरीपल्स के अनुसार चीन से सूती वस्त्र और कच्चा माल ताम्रलिप्ति आता था और वहाँ से दक्षिण को भेजा जाता था। परवर्ती काल में चीनी यात्री फाह्यान भी यहाँ आया था। उसके वर्णन से पता चलता है कि यहाँ बौद्ध धर्म का बहुत प्रसार प्रचार था।

कंचनपुर :

कंचनपुर पूर्वी समुद्र तट पर स्थित एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था जिसकी पहचान उडीसा मे आधुनिक भुवनेश्वर के साथ की गयी है। कंचनपुर के ताम्रपर्णी के साथ व्यापारिक सम्बन्ध थे।

दंतपुर :

यह पूर्वी समुद्र तट पर स्थित एक बन्दरगाह था। अनेक जातक कथाओं में इसे कलिंग की राजधानी बताया गया है। यद्यपी अभी तक दंतपुर की आधुनिक पहचान निश्चित रूप से नहीं की जा सकी है परन्तु कुछ विहान इसे आधुनिक जगन्नाथपुरी मानते हैं। टॉलमी ने दंतपुर को पलौर कहा है। यह दक्षिण पूर्व एशिया को जाने वाला एक अन्तर्राष्ट्रीय बन्दरगाह था।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 5, May 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205467 |

कावेरीपट्टनम :

यह दक्षिण भारत में कावेरी नदी के मुहाने पर स्थित था। यह प्राचीन काल में चोल साम्राज्य की राजधानी थी, जिसका वर्णन सम्राट अशोक के शिलालेख में चेर और पाण्ड्यों के साथ किया गया है। इस बन्दरगाह का निर्माण बहुत ही वैज्ञानिक तरीके से किया गया था। यहाँ पर माल उतारने चढ़ाने और संग्रह करने की सुविधाऐं प्रदान की गयी थी। समुद्र तट के किनारे ही गोदाम बने हुए थे। जहाँ पर आने वाले माल को उतारा जाता था। बन्दरगाह के पास ही यवन व्यापारियों की बस्तियाँ और बजार थे। पास ही विदेशी व्यापारियों के ठहरने के स्थान भी थे। यह इत्र, सूती, ऊनी रेशमी वस्त्र, चन्दन, मूँगे, सोना, मोती आदि का केन्द्र था। मिलिन्दपन्हों ने इसे कोलपत्तन कहा गया है। पेरीपल्स के अनुसार यह विभिन्न प्रकार के मसाले और अन्य भारतीय वस्तुओं के निर्यात के लिए एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त वर्णन से यह पता चलता है कि मौर्यकाल में भारत के पूर्वी और पश्चिमी समुद्र तट पर अनेक महत्वपूर्ण बन्दरगाह थे। इन बन्दरगाहों से भारतीय व्यापारी अपने व्यापारिक माल को विदेशों तक ले जाते थे और विदेशी व्यापारी अपना माल बेचते भारत आते थे। मौर्यकाल मे जहाँ पश्चिमी समुद्री तट पर स्थित बन्दरगाहों से फारस की खाड़ी और पश्चिमी देशों के साथ व्यापार होता था वहीं पूर्वी समुद्री तट पर स्थित बन्दरगाहों से दक्षिण पूर्वी देशों के साथ व्यापार किया जाता था।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. R.S. Sharma - Urban Development in Ancient India
2. आर.के.मुखर्जी – चन्द्रगुप्त मौर्य और उनका काल
3. डॉ. कोलेश्वर राय – भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास
4. P.C. Prasad – Foreign trade and commerce in ancient India
5. उदयनारायण राय – प्राचीन भारत के नगर और नगर जीवन
6. बी.सी. लाहा – प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल

Impact Factor: 8.423

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

Scan to save the contact details